ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.20, No.1, Jan. – Mar., 2025/41

रावतभाटा के मंदिर एवं शैलचित्र

डी0 पी0 तिवारी एवं अनुष्का ओझा

https://doi.org/ 10.61410/ had.v20i1.228

रावतभाटा, राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जनपद की एक तहसील है जो चित्तौड़गढ़ जनपद मुख्यालय से 131 किलोमीटर तथा समीपवर्ती जनपद कोटा से 50 किलोमीटर की दूरी पर $24^{0}93'75''$ उत्तरी अक्षांस एवं $75^{0}58'$ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसी शहर में आठ न्यूक्लियर रिएक्टर हैं तथा चम्बल नदी पर राजस्थान का सबसे बड़ा बांध राणाप्रताप सागर बांध बना है जिस पर 172 मेगावाट हाइड्रोइलेक्ट्रिक संयंत्र स्थापित है।

कोटा से रावतभाटा जाते समय 45 किलोमीटर की दूरी पर रावतभाटा से 2 किलोमीटर उत्तरचम्बल और बामिनी (ब्राह्मणी) नदी के संगमके समीप स्थित बाड़ोली गॉव में सड़क के बाएं पार्श्व में नवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के बीच बने पत्थर के 9 मंदिरों का एक समूह $24^{0}\ 57'\ 29''$ उत्तरी अक्षांस एवं $75^{0}\ 35'\ 37''$ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इन मंदिरों के निर्माण का श्रेय श्वेत हूण शासक मिहिर कुल को दिया जाता है जिसे वर्ष 1881 में प्रकाश में लाने का श्रेय कर्नल जेम्स टॉड को है। उन्होंने इसकी नक्काशी को देख कर लिखा था कि ''जिसकी विचित्र और भव्य बनावट का तथावत वर्णन करना लेखनी की शक्ति से बाहर है मानो हुनर का खजाना खाली कर दिया गया''[1]। इस मंदिर में फर्श और स्तम्भों पर छोटे–छोटे अभिलेख उत्कीर्ण मिलते हैं जिनमें से एक जो कार्तिक सुदी द्वादसी संवत् 989 (931 ई0) का है, में व्याकुलज द्वारा सिद्धेश्वर मंदिर के जीर्णोद्धार का एवं संवत् 963 चैत्र सुदी 5 (905 ई0) के दूसरे अभिलेख में व्याकुलज द्वारा शिव मंदिर के निर्माण का उल्लेख है। इन मंदिरों में दो के अधिष्ठाता देवता विष्णु, चार के शिव, एक के गणेश, एक की महिषासुर मर्दिनी तथा एक की माता हैं। सभी मंदिर अभूतपूर्व ढंग से अलंकृत हैं तथा उन्हें गुर्जर प्रतिहार शैली में निर्मित किया गया है, जिसमें नागर और पंचायतन शैली सम्मिलित है। इनमें से कतिपय मंदिर पूर्ण रूप से सुरक्षित किन्तु कुछ भग्नावस्था में हैं और उनके भग्नावशेष मंदिर परिसर में आज भी विद्यमान हैं।इनमें पूजा अर्चना की जाती है। बताया जाता है कि औरंगजेब ने इन मंदिरों पर आक्रमण कर यहां की मूर्तियों को तोड़ने का प्रयास किया था किन्तु वह इस स्थल पर किसी मस्जिद का निर्माण नहीं करा सका। वर्ष 1998 में इस मंदिर से गणेश की एक अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा चोरी कर लंदन भेज दी गई थी जो 10 अगस्त 2020 को वापस प्राप्त कर ली गई है किन्तु अभी भी

- प्रेसिडेंट/कुलपति, जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, रानपुर, कोटा, राजस्थान
- सहायक आचार्य, श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

वह इस मंदिर में स्थापित नहीं की जा सकी है।वर्तमान में यह मंदिर समूह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की जयपुर सर्किल द्वारा संरक्षित है। इन मंदिरों[2] का संक्षिप्त परिचय निम्नवत है।

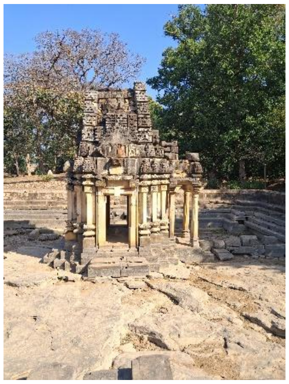
चित्र–1

चित्र–2

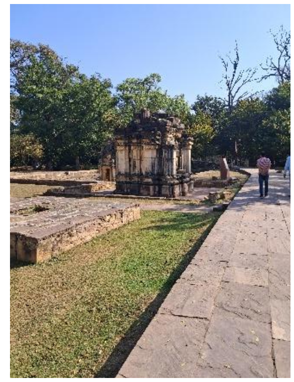
चित्र–3

1. शिव मंदिर– मंदिर प्रांगण में प्रवेश करते ही एक पक्की बावड़ी के बीचो–बीच पूर्बाभिमुखी एक छोटा सा मंदिर है जिसके गर्भ गृह में शिवलिंग स्थापित है। इसमें तीन द्वार हैं, इसकी छत सादी और स्तम्भों पर टिकी है। बरसात के मौसम में यह बावड़ी झरनों से आने वाले जल से परिपूरित रहती है जो शिव के जलेसर स्वरूप को साकार करती है (चित्र–1)। इसी के पास अन्य दो छोटे–छोटे मंदिर हैं जिनके गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित हैं (चित्र–2,3)। तीनों मंदिर सादी वेदी पर उठाए गए हैं जिनका जंघा भाग भी सादा है। इनका पिरामिडाकार शिखर टूट कर गिर गया है। इनके टूटे आमलक और शिखर में लगाए गए पत्थर समीप में बिखरे दिखाई देते हैं। यहां का चौथा शैव मंदिर घटेश्वर मंदिर है। इस मंदिर को यह नाम घट के आकार के शिवलिंग जो इसके गर्भगृह में स्थापित है, के कारण मिला होगा (चित्र–4)।मंदिर के बाहर शिवलिंगाभिमुखी नन्दी

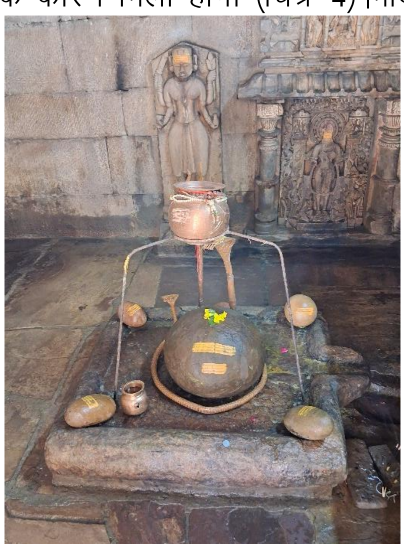
चित्र–4

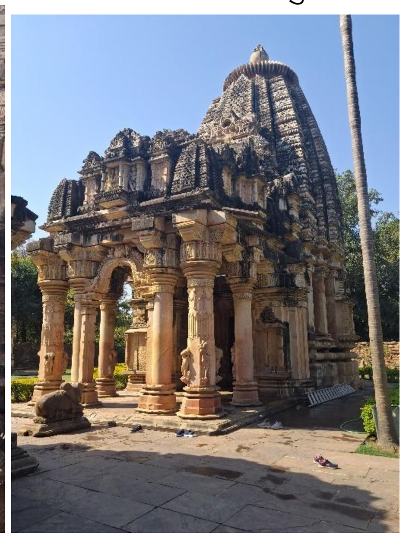
चित्र–5

चित्र–6

बैठी मुद्रा में बने हैं (चित्र–5)। इसका मुख मंडप छः गोल अलंकृत स्तम्भों पर आधारित है जिनके निचले भाग पर चारो तरफ सुन्दर स्त्री आकृतियॉ उकेरी गई हैं। इन स्तम्भों का बीच

चित्र–7

चित्र–11

चित्र–10

चित्र–8

चित्र–9

का भाग घंटियों से अलंकृत है जिन पर कहीं–कहीं लेख उत्कीर्ण है (चित्र–6–8)। स्तम्भों के शीर्ष भाग पर स्त्री, पुरुष और मिथुन मूर्तियां बनी हैं जिनमें कतिपय कामुक मुद्रा में भी बनी हैं।

चित्र–12, घटेश्वर मंदिर का शिखर भाग

मंदिर की बाहरी दीवारों पर तीनोंदिशाओं में तीन ताखे बने हैं जिसके दक्षिण की ओर के ताखे में नटराज शिव, उत्तर दिशा के ताखे में चामुण्डा(चित्र–9,10) और पश्चिमी ताखे में गणेश की वह प्रतिमा स्थापित थी जो चोरी कर ली गई। मंदिर के प्रवेशद्वार पर नीचे चन्द्रशाला, बाएं द्वारपाल तथा दाएं प्रतिहारीउत्कीर्ण हैं। इसका गर्भगृह वर्गाकार 12X12 फीट का है। शिवलिंग के पीछे की दीवार पर पार्वती की भव्य प्रतिमा उकेरी गई है जो खण्डित है। यह प्रतिमा 110 सेंटीमीटर ऊंची तथा 127 सेंटीमीटर चौड़ी है। इसका शिखर पिरामिडाकार प्रतिहार कालीन नागर शैली के मंदिरों की भांतिहै जिसे अलंकृत जालीदार पाषाण पिण्डों के संयोजन से बनाया गया है। शिखर के शीर्ष पर आमलक और उसके ऊपर कलश स्थापित है। मुखमंडप की छत सपाट है जिसके चारो कोनों पर स्तूपिकाएं बनाई गई हैं जिनके बीच में स्त्री आकृतियां उकेरी गई हैं (चित्र–12)। इस मंदिर के सामने स्तम्भों पर आश्रित एक भव्य रंगमंडप बना है जिसके बीच में एक छोटा सा शिवलिंग है। इसकी छत सुन्दर ढंग से अलंकृत है जिसके बीच में पत्थर का झूमर लटकता हुआ बनाया गया है (चित्र–13, 14)।

चित्र–13, रंगमंडप

चित्र–14, रंगमंडप की अलंकृत छत

2. महिषासुरमर्दिनी मंदिरः

घटेश्वर मंदिर के पीछे दक्षिण–पश्चिम के कोने पर पंचरथ महिषासुरमर्दिनी मंदिर है (चित्र–15)। इसका मुख मुखमंडप चार खम्भों पर आश्रित है। ये स्तम्भ नीचे अष्टफलक अधार पर उठे हैं है

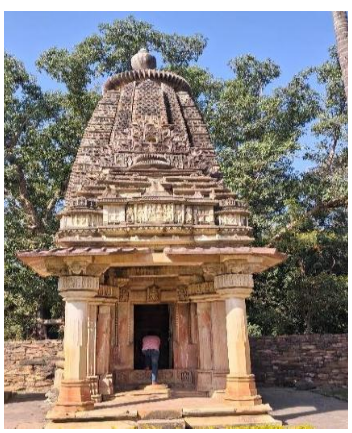

चित्र–15, महिषासुरमर्दिनी मंदिर

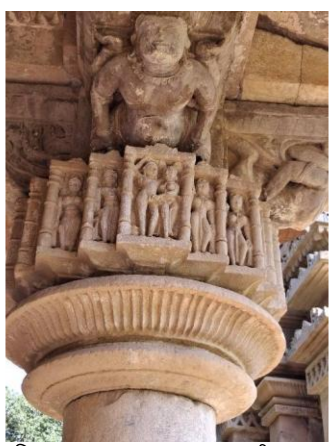

चित्र–16, स्तम्भ का ऊपरी भाग

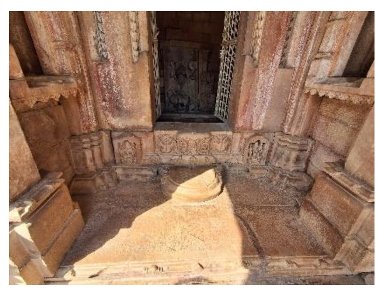

चित्र–17, प्रवेश द्वार

(चित्र–16)। अन्तराल के जिनका शीर्ष गोलाकार है और उसे स्त्री, पुरुष एवं देव प्रतिमाओं से सजाया गया है, इनमें कुछ कामोद्‌दीपक भी हैं। इनके ऊपर भार वाहक बने हैं जिनकी पीठ पर छत के भार को रोका गया बाद मंदिर का प्रवेशद्वार लगभग सादा है। प्रवेशद्वार के पास सादी चन्द्रशिला और उसके ऊपर चौखट पर एक पंक्ति में दोनों किनारों पर दो स्त्री आकृतियां और उनके बीच में दो व्याल उकेरे गए हैं (चित्र–17)। द्वार के ऊपरी उत्तरंग पर तीन देवियां बनी हैं। गर्भगृह के अन्दर महिषासुर का संहार करती दुर्गा की 145X84 सेंटीमीटर परिमाप की

चित्र–18, महिषासुर मर्दिनी की खंडित प्रतिमा

चित्र–19, मंदिर का शिखर भाग

मूर्ति स्थापित है जो खण्डित है (चित्र–18)। इस मंदिर का नागर शिखर पिरामिडाकार लतिन शैली का है। इसके ललाट बिम्ब पर पार्वती, कार्तिकेय और गणेश बने हैं। उनके ऊपर की पंक्ति में अलग–अलग दूरी पर बानर वृन्द बनाए गए हैं। शिखर के शीर्ष पर आमलक और उसके ऊपर पूर्णकलश स्थापित है (चित्र–19)।

3. विष्णु मंदिरः महिषासुर मर्दिनी मंदिर के बाएं पार्श्व में एक सपाट छत वाले शिखर विहीन मंदिर में चतुर्भुजी विष्णु की वामन मूर्ति स्थापित है। इस मूर्ति की चारो भुजाएं टूट गई हैं,। विष्णु के शिर पर मुकुट, गले में हार, भुजाओं पर बाजूबन्द, कमर में कटि मेखला, तथा घुटनों तक लटकती वनमाला प्रदर्शित है। श्री मूर्ति के दोनों पार्श्व में प्रतिहारी युगल, व्याल एवं उपासक बने हैं।

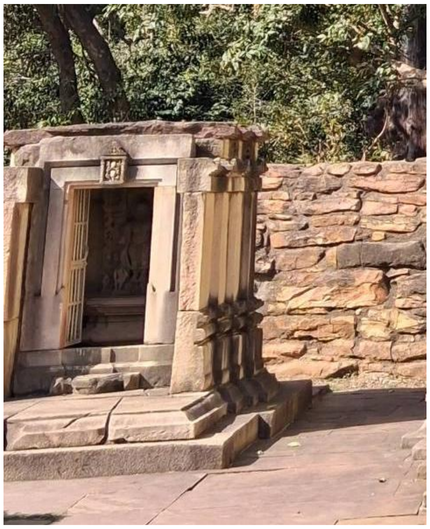

चित्र–20 चित्र–21

3. गणेश मंदिरः घटेश्वर मंदिर के बाएं पार्श्व में गणेश जी का एक छोटा सा मंदिर है जिसका शिखर अब टूट गया है। इसके सामने छोटा सा मुख मंडप है। इसके गर्भ गृह में 106X195 सेंटीमीटर परिमाप की गणेश की प्रतिमा स्थापित है (चित्र–22)। गणेश मूर्ति के दांए की ओर झुकी सूंढ़ टूट गई है। उनके दो पैरों के नीचे भाग भी टूटे हैं। लम्बोदर पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए प्रदर्शित हैं (चित्र–23)। घटेश्वर मंदिर

चित्र–22, गणेश मंदिर

चित्र–23, गणेश प्रतिमा

चित्र–24त्रिमूर्ति मंदिर

चित्र–25, त्रिमूर्ति

के बाएं दक्षिण की ओर एक छोटी मंडपिका जो पूरी तरह सुरक्षित है, त्रिमूर्ति देवों को समर्पित है (चित्र–24) जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश की आवक्ष आकृति बनी है (चित्र–25)। इसके प्रवेश द्वार पर बांए गंगा तथा दांए प्रतिहारी सहित यमुना बनी हैं। इसकी छत ऊपर से समतल है जिसमें पद्मचक्र बनाया गया है।

इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर में हनुमान जी की नवीन प्रतिमा स्थापित है जिसके समीप में एक बावड़ी बनी है जिसमें उतरने के लिए तीन तरफ से सीढ़ियां और चौथी तरफ एक छोटा सा कक्ष बना है। इसमें वर्ष पर्यन्त जल भरा रहता है। मान्यता के अनुसार इस स्थल पर पाण्डवों का आगमन हुआ था। इसी प्रांगण में सात अन्य शिवलिंग खुले में एक पंक्ति में छोटे–छोटे चबूतरों पर स्थापित हैं। मंदिर परिसर में दो पाषाण स्तम्भ खड़े हैं जिनपर कलात्मक ढंग से हारावली, लटकती घण्टियां, और सुन्दरियों का उत्कीर्णन किया गया है (चित्र–26)। इनके नीचे राजस्थान के लोकप्रिय पशु ऊँट का अंकन है (चित्र–27)। मंदिरों के टूटे तोरण स्तम्भ, आमलक,तथा मूर्तियों के खण्डित भाग भी परिसर में यत्र–तत्र विकीर्ण हैं (चित्र–28)। इस प्रकार चित्तौड़गढ़ के रावतभाटा का यह मंदिर परिसर दसवी–ग्यारहवीं शताव्दी के कलात्मक स्थापत्य एवं क्षेत्र में शैव और वैष्णव धर्म के प्रचलन का मूर्त साक्षी है।

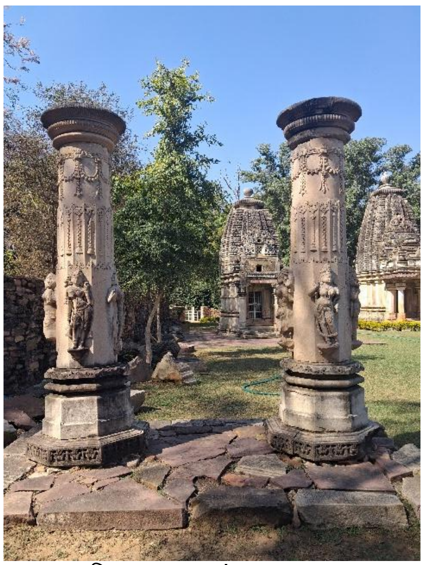

चित्र–26, अलंकृत स्तम्भ

चित्र–27,स्त्री प्रतिमा के पार्श्व में ऊँट

चित्र–28,खण्डित स्तम्भ

शैलचित्रः

रावतभाटा में यह शैलाश्रय राणाप्रताप सागर डैम से 3.7 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। राणाप्रताप सागर डैम से कैनाल रोड से उपजिला अस्पताल, कामचोर, 132 के0वी0ए0 बरोली पावर हाउस होते हुए बांए मुड़ कर थोड़ी दूर पैदल चल कर इस शैलाश्रय तक पंहुचा जा

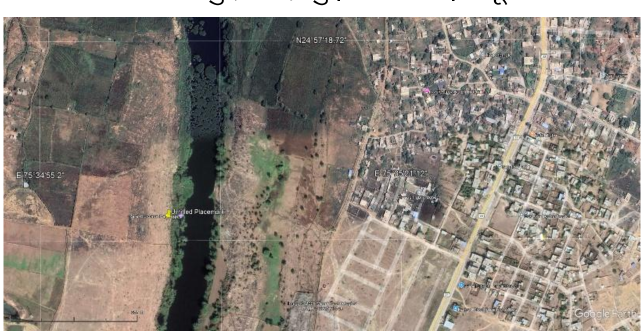

चित्र–29, चामला नाला के किनारे स्थित शैलाश्रय

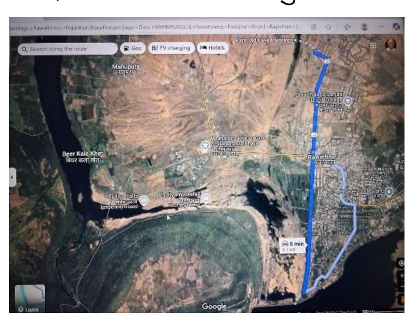

चित्र–30, शैलाश्रय तक पंहुचने का मार्ग

सकता है (चित्र–29)। यह शैलाश्रय चम्बल में मिलने वाले एक नाला चामला नाला के किनारे 24^0 57’ 07”उत्तरी अक्षांस एवं 75^0 35’ 04”पूरबी देशान्तर पर स्थित है(चित्र–30)।

इस नाले के किनारे सीधी खड़ी चट्ान पर कतिपय चित्र हल्के गेरुए रंग में बने हुए मिलते हैं। इनमें से बहुत कुछ का रंग इतना फीका हो गया है कि उनकी पहचान भी दुष्कर है। इन चित्रों को फूल, मानव, पशु, ज्यामितिक आकृति और चिड़िया पांच बर्गों में विभक्त किया जा सकता है। पुष्प प्रकार के चित्र गेरुए और श्वेत रंगों से बनाए गए हैं। सफेद रंग से बनाए गए एक पुष्प पादप को गमले में लगाया गया है जिसके दो पत्ते बांए और दांए लटकते दिखाए गए हैं। बीच में एक कली बनाई गई है। लगता है किसी आधुनिक कलाकार ने यहां अपनी कला का प्रदर्शन किया है (चित्र–31)। इसी प्रकार का चित्र–33 भी है। चित्र–32 पुराना है जिसमें दो डालियों को ऊपर की तरफ एक दूसरे से मिलते हुए बनाया गया है। दूसरे वर्ग के चित्रों में पशुओं के चित्र हैं। पहला पशु गाय जैसी प्रतीत होती है जो चलती मुद्रा में

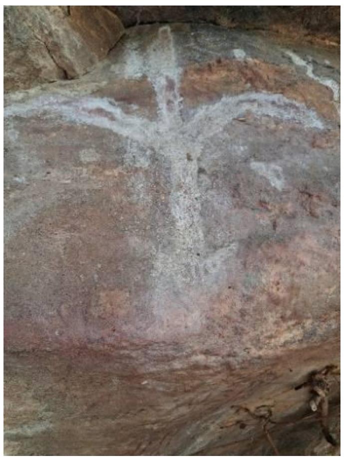
चित्र–31

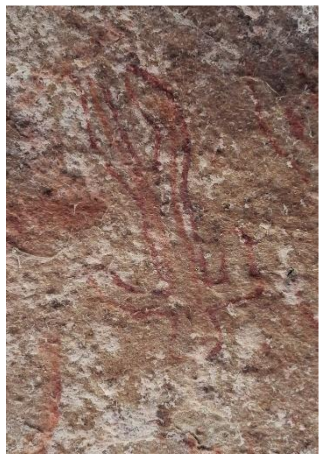
चित्र–32

चित्र–33

बनाई गई है। इसकी लम्बी पूँछ दूर तक लटकी है (चित्र–34)। दूसरा पशु भी गाय–बैल परिवार का है जिसके कूबड़ नहीं है। इसका शिरोभाग अस्पष्ट है चित्र–35। तीसरा लम्बी गर्दन वाला जानवर हिरन जैसा प्रतीत होता है जिसके शरीर के अन्दर वाले भाग को आड़ी–तिरछी रेखाओं से सजाया गया है चित्र–36)।

चित्र–34

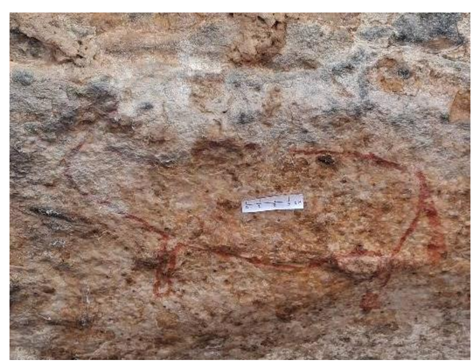
चित्र–35

चित्र–36

चित्र–37

चित्र–38

चित्र–39

इन चित्रों में मनुष्य की आकृतियां आनुपातिक दृष्टि से लम्बी और सुडौल हैं। चित्र–37 में चलती मुद्रा में बांया हाथ ऊपर की ओर उठाए एक पुरुष चित्रित है जिसका वक्ष के ऊपर का भाग अस्पष्ट है। चित्र–38 में एक मोटी रेखा के द्वारा पुरुष की आकृति बनाई गई है जिसमें उसी मोटाई में दोनों पैरों को भी प्रदर्शित किया गया है। चित्र–39 में पुरुष के सभी अंग प्रत्यंग स्पष्ट है और उसकी लम्बी काया को सफलतापूर्वक चित्रित किया गया है। बैठी मुद्रा मेंपुरुष को चित्रित करने का प्रयत्न चित्र 40 में किया गया है जबकि चित्र–41 में पुरुष को उमंग मुद्रा में बनाने का प्रयास किया गया है। एक स्थल पर तीन चार पुरुष आकृतियां एक साथ बनाई गई हैं चि़त्र–42। यहीं एकाकी नृत्य मुद्रा में एक पुरुष भी प्रदर्शित है चित्र–43।

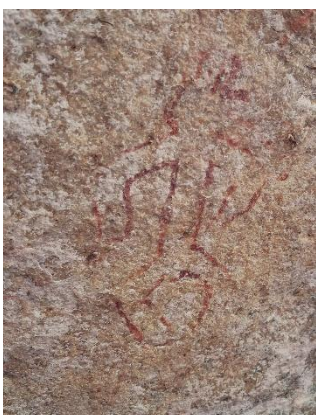
चित्र–40

चित्र–41

चित्र–42

चित्र–43

चित्र–44

चित्र–45

चित्र–46

यहां एक बड़े पक्षी मोर द्वारा अपने बच्चे को दाना खिलाने का चित्रण यद्यपि धुंधला है किन्तु बहुत आकर्षक है (चित्र–44)। ज्यामितीय आदर्श पर दो ऐसी आकृतियां एक साथ बनाई गई हैं जिनमें दो वृत्तों के बाहर दस त्रिभुजों को जोड़ कर सूरजमुखी के फूल या सूर्य का युगल अंकन किया गया है चित्र–45। अंतिम चित्र काले रंग की पतली तूलिका से एक भैंस को बनाया गया है जिसकी दोनों सीगें, अवनत मुख आक्रामकता का आभास कराती हैं चित्र–46)।
स्पष्ट है कि रावतभाटा की पहाड़ियों के समीप वाले क्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल से मानव रहने लगा था। कूबड़ विहीन पशुओं का अंकन उनकी नव पाषाणकाल के पूर्व की प्राचीनता निर्धारित करने में सहायक हो सकती है। हड़ौती क्षेत्र के अनेक स्थलों से अश्यूलियन हैण्ड ऐक्स, क्लीवर और स्क्रेपर उपकरण प्राप्त हो चुके हैं किन्तु अभी तक तत्कालीन मानव के अस्थि अवशेष कहीं से संसूचित नहीं हैं जिन्हें ढूंढने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र का यह मंदिर समूह 9वीं से 11वीं शताव्दी के मंदिर स्थापत्य पर सुन्दर प्रकाश डालता है। उत्तर भारत के अन्य मंदिरों में इस समय परिक्रमा पथ बने हुए मिलते हैं जिनका इन मंदिरों में अभाव दिखताहै।

संदर्भः

1. hi.wikipedia.org/wiki/बाडौली–मंदिर
2. आहूजासुषमा, हाडौतीकला और स्थापत्य की समृद्ध विरासत, पृष्ठ 114–120;Tripathi L.K., Temples of Baroli, Amitabha Prakashan, Varanasi, 1975; Dhaki M.A., Encyclopedia of Indian temple Architecture, North India, Beginning of Medieval Idioms, Delhi, 1998; Report of Archaeological Survey of India, Jaipur Circle, 2003, PP 1-4; Archaeological Survey of India, Inventory of Monuments and Sites of National

Importance, Vol. II, Part I, Jaipur Circle, PP 72-80; Lokesh Gunjal, Temple Art of Badoli, International Journal of Language, Literature and Culture, Vol-II, Issue-2, March-April 2022, PP1-4; Chandramani Singh (editor), Protected Monuments of Rajasthan, Jaipur, 2002; Ambika Dhaka, Brahmanical Temple Art and Architecture in Hadoti from Earliest times to Seventh Century AD, Bhartiya Kala Prakashan, Delhi, 2012.

3. इतिहास के आइने में हाड़ौती का समाज और संस्कृति, संपादक डॉ0 सज्जन पोसवाल एवं डॉ0 निधि शर्मा, जयपुर, 2023 में प्रकाशित डॉ0 तेज सिंह मावई का लेख चाम्बलानाला के शैलचित्रों में पशु चित्रण, पृष्ठ 1–8.
4. वाकणकर विष्णु श्रीधर, हाड़ौती की प्राचीनतम पुरातात्विक संपदा, हाड़ौती का पुरातत्व, संपादक डॉ0 शान्ति भारद्वाज एवं डॉ0 भगवती जैन, कोटा, 1989 में प्रकाशित लेख, पृष्ठ 13.
5. डॉ0 जैन बी0 एल0, हाड़ौती की पुरातात्विक विरासत, हाड़ौती का पुरातत्व, संपादक डॉ0 शान्ति भारद्वाज एवं डॉ0 भगवती जैन, कोटा, 1989 के पृष्ठ 142 पर प्रकाशित लेख।